

पद १५६

(राग: कानडा - ताल: जलद त्रिताल)

प्रीतमकी झलक देख उठीमा । उचक बैठी मा । पिहुंन देखीमा । हे
सपनोमें, निंदरियामे दचक उचक अचानक चौक परी ॥ध्रु. ॥
बारबार पिहुं मोरे मन आवे छब देखन ललचावे, जिया ललचावे
याकहूं सोंच सोंच मानिक मुख मोहे भूल परी ॥१॥